पत्र सूचना शाखा
सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ0प्र0

<u>राज्यपाल ने एकनाथ रानडे के जीवन पर आधारित फिल्म 'एक जीवन एक ध्येय' का अवलोकन किया</u>

लखनऊः 19 नवम्बर, 2017

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री राम नाईक ने आज आइनाॅक्स सिनेमा हाॅल में विवेकानन्द केन्द्र लखनऊ द्वारा निर्मित एवं एकनाथ रानडे जी के जीवन पर आधारित फिल्म 'एक जीवन एक ध्येय' के विशेष शो का अवलोकन किया। इस अवसर पर विवेकानन्द केन्द्र के संचालक श्री दयानन्द लालजी तथा अपर महाधिवक्ता श्री रमेश सिंह सहित अन्य गणमान्य नागरिकजन उपस्थित थे। श्री एकनाथ रानडे का जन्म 19 नवम्बर, 1914 को महाराष्ट्र के अमरावती जिले के टिम्टाला गाँव में हुआ था। श्री एकानाथ ने डाॅ0 हेडगेवार से प्रेरणा लेकर 1938 में प्रचारक के रूप में संघ के कार्य हेतु महाकौशल प्रांत में आ गये थे। उनके नेतृत्व में कन्याकुमारी स्थित विवेकानन्द स्मारक शिला का निर्माण हुआ।

राज्यपाल ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि यह संयोग है कि आज स्व0 एकनाथ रानडे जी का जन्म दिवस है तथा पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 इंदिरा गांधी का भी जन्म शताब्दी दिवस है। भारत सरकार द्वारा आज का दिन कौमी एकता दिवस के रूप में मनाया जाता है जिसमें राष्ट्रीय अखण्डता की शपथ दिलाई जाती है। राज्यपाल ने अपनी ओर से दोनों को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

श्री नाईक ने कहा कि एकनाथ रानडे जी विश्व के सबसे बड़े संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य थे। राज्यपाल ने कहा कि यह उनका सौभाग्य है कि मुंबई में रहते हुए उन्हें कई बार एकनाथ रानडे जी को देखने, सुनने और बातचीत करने का अवसर मिला। एकनाथ रानडे जी का संघ से पुराना रिश्ता है। वे विभिन्न पदों की जिम्मेदारी वहन करते हुए क्षेत्र प्रचारक तथा संघ सरकार्यवाह जैसे महत्वपूर्ण पदों पर भी अपनी भूमिका निभा चुके हैं। राज्यपाल ने कहा कि एकनाथ रानडे जी ने शिला स्मारक का निर्माण तथा विवेकानन्द केन्द्र जैसे महत्वपूर्ण कार्य की जिम्मेदारी पूरी तनमयता से निभाई। एकनाथ जी ने शिला स्मारक के निर्माण में प्रत्येक प्रांत को सहयोगी बनाने के साथ ही आम जनता का सहयोग एक, दो तथा पांच रूपये के पत्रक द्वारा प्राप्त किया। शिला स्मारक के निर्माण में 1 करोड़ 35 लाख रूपये का खर्च आया जिसमें 85 लाख रूपये का सहयोग 30 लाख सामान्य नागरिकों ने किया। उन्होंने कहा कि आधुनिक काल में शिला स्मारक पूरे भारत को एक सूत्र में बांधने का सुंदर उदाहरण है।

श्री नाईक ने लघु वृतचित्र की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे महापुरूषों के कार्य को जनता के समक्ष लाना वास्तव में प्रेरणा देने वाला कार्य है। जनता के लिए किए गए कार्य को जनता के समक्ष लाना महत्व का काम होता है। इससे काम करने वाले को प्रेरणा मिलती है तथा दूसरे लोग भी प्रेरित होते हैं।

अंजुम/ललित/राजभवन (433/20)